बहादुर सैनिक जनोश

विक्टर एम्ब्रस

बहादुर सैनिक जनोश

विक्टर एम्ब्रस

हंगरी के एक छोटे से गाँव में बूढ़ा सैनिक जानोश रहता था. वो हमेशा अपनी चमकदार लाल वर्दी पहनता था और अपनी तलवार रखता था, और वो हर दिन गाँव की सड़कों पर घूमता था.

उस गाँव का कोई आदमी कभी भी अपने घर से दूर नहीं गया था. इसलिए गांव वाले सोचते थे कि जानोश, जिसने अपना अधिकांश जीवन युद्धों में बिताया था, एक बहुत बहादुर व्यक्ति होगा. लोगों को जानोश की कहानियाँ सुनना पसंद थीं, विशेषकर उस समय के बात जब वो महान नेपोलियन से भिड़ा था और उसने नेपोलियन की सेना को अकेले हराया था.

लोग, जानोश के कहे हर शब्द पर विश्वास करते थे - सिवाए उस छात्र के, जो कभी-कभार ज़ोर से छींक देता था. (जब हंगरी में कोई किसी कहानी पर छींकता है, तो उसका मतलब होता है कि वो वास्तव में उस कहानी की सच्चाई पर विश्वास नहीं करता है.)

लेकिन उसने बूढ़े सैनिक को अपनी कहानी सुनाने से नहीं रोका. बाकी ग्रामीणों ने भी उसकी कहानी को बड़े ध्यान से सुना. यह कहानी जानोश की सुनाई हुई कहानी है.

जानोश ने कहा, "मैं बस शांति से धूम्रपान कर रहा था, तभी मैंने अपने पीछे भारी क़दमों की आहट सुनी. ..."

"मैं अपने घोड़े पर कूदा - और तब मैंने एक भयावह दृश्य देखा! महान नेपोलियन अपने सभी भयंकर सैनिकों के साथ सीधे मेरी ओर आ रहा था."

"उस स्थिति में कोई भी अन्य व्यक्ति अपनी
जान बचाने के लिए भागता, लेकिन मैंने
अपनी तलवार खींची और उन्हें धमकी दी,
और फिर वे सभी दिशाओं में भागने लगे."

"'तोप मंगवाओ!' नेपोलियन दहाड़ा. फिर जितनी तेजी से उसका घोड़ा उसे ले जा सकता था वो उतनी तेजी से भाग गया."

"कुछ देर बाद सेना अपनी सबसे बड़ी तोप के साथ वापस लौटी. उन्होंने मुझ पर एक विशाल तोप का गोला दागा. मेरा काम उस गोले से बचना था. लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होता..."

“मैंने जल्द ही उन पर फिर से हमला करने लगा और वे फिर से भागने लगे. लेकिन मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि मेरा घोड़ा सबसे तेज़ था, और उनमें से एक भी सैनिक मुझसे बच नहीं पाया.

"फिर भी मैं एक दयालु व्यक्ति हूं, और मैंने उनकी जान बचाई, यहां तक कि मैंने महान नेपोलियन की भी जान बक्शी."

"सच में, बाद में हम अच्छे दोस्त बन गए, और फिर हम एक साथ पेरिस गए. नेपोलियन एक बहुत ही शांतिप्रिय व्यक्ति बन गया और उसके बाद उसने कभी कोई दूसरा युद्ध नहीं छेड़ा."

"हां नेपोलियन मुझसे बहुत प्यार करता था और अपनी जान बख्शने के लिए वो मेरा इतना आभारी था कि उसने मेरी जेबें सोने से भर दीं. और अगर मेरी जेबों में इतने बड़े छेद न होते, तो मैं ज़रूर आप लोगों में सबसे अमीर आदमी होता."

गांववाले जानोश की बहादुरी से आश्चर्यचकित होकर मंत्रमुग्ध होकर उसकी कहानी सुनते रहे - एक छात्र को छोड़कर बाकी सभी.

छात्र एक बार फिर बहुत ज़ोर से छींका.

उसके बाद बूढ़ा सिपाही जानोश उठकर दरवाजे से बाहर चला गया.

अंत